Q. No. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में मुक्त व्यापार एवं संरक्षण नीति में अंतर स्पष्ट करें।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार (International Trade) वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत विभिन्न देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं, तकनीक तथा पूँजी का आदान-प्रदान किया जाता है। कोई भी देश अपनी सभी आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन स्वयं नहीं कर सकता, इसलिए वह अन्य देशों से आयात करता है तथा जिन वस्तुओं का उत्पादन अधिक होता है उनका निर्यात करता है। इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार देशों की आर्थिक प्रगति, रोजगार, उत्पादन, तकनीकी विकास तथा जीवन-स्तर को प्रभावित करता है।

किसी भी देश की व्यापार नीति का उद्देश्य यह निर्धारित करना होता है कि विदेशी व्यापार को किस प्रकार नियंत्रित या प्रोत्साहित किया जाए। व्यापार नीति मुख्यतः दो प्रकार की होती है– मुक्त व्यापार (Free Trade Policy) तथा संरक्षण नीति (Protection Policy)। दोनों नीतियाँ अपने उद्देश्य, कार्यप्रणाली तथा प्रभाव के आधार पर एक-दूसरे से भिन्न हैं।

मुक्त व्यापार (Free Trade) का अर्थ

मुक्त व्यापार वह व्यवस्था है जिसमें सरकार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर न्यूनतम हस्तक्षेप करती है। इस नीति के अंतर्गत आयात-निर्यात पर शुल्क बहुत कम या समाप्त कर दिए जाते हैं तथा कोटा, लाइसेंस और अन्य व्यापारिक प्रतिबंधों को कम किया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व व्यापार को बढ़ावा देना, प्रतिस्पर्धा बढ़ाना तथा उपभोक्ताओं को कम कीमत पर गुणवत्तापूर्ण वस्तुएँ उपलब्ध कराना है।

- मुक्त व्यापार की प्रमुख विशेषताएँ
- आयात-निर्यात पर न्यूनतम शुल्क।
- व्यापारिक प्रतिबंधों का अभाव।
- विदेशी निवेश को प्रोत्साहन।
- वैश्विक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि।
- संसाधनों का कुशल उपयोग।
- उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प।
- उत्पादन लागत में कमी।
- आर्थिक विकास एवं वैश्वीकरण को बढ़ावा।
- संरक्षण नीति (Protection Policy) का अर्थ

संरक्षण नीति वह नीति है जिसके अंतर्गत सरकार घरेलू उद्योगों, किसानों तथा श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए विदेशी वस्तुओं के आयात पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध लगाती है। सरकार आयात शुल्क, आयात कोटा, लाइसेंस प्रणाली, सब्सिडी तथा एंटी-डंपिंग शुल्क जैसे उपाय अपनाती है ताकि देश के उद्योग विदेशी प्रतिस्पर्धा से सुरक्षित रह सकें।

- संरक्षण नीति की प्रमुख विशेषताएँ
- आयात पर उच्च सीमा शुल्क लगाया जाता है।
- आयात की मात्रा पर नियंत्रण रखा जाता है।
- घरेलू उद्योगों को सरकारी सहायता एवं सब्सिडी दी जाती है।
- विदेशी प्रतिस्पर्धा को सीमित किया जाता है।
- राष्ट्रीय सुरक्षा एवं रणनीतिक उद्योगों की रक्षा की जाती है।
- रोजगार और स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा दिया जाता है।
- भुगतान संतुलन सुधारने का प्रयास किया जाता है।
- मुक्त व्यापार एवं संरक्षण नीति में अंतर
- आधार

- मुक्त व्यापार
- संरक्षण नीति

1. अर्थ

व्यापार पर न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप

व्यापार पर सरकारी नियंत्रण एवं प्रतिबंध

2. उद्देश्य

व्यापार और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना

घरेलू उद्योगों एवं रोजगार की रक्षा करना

3. आयात शुल्क

बहुत कम या शून्य

अधिक लगाया जाता है

4. व्यापारिक बाधाएँ

कोटा एवं लाइसेंस कम

कोटा, लाइसेंस एवं प्रतिबंध अधिक

5. प्रतिस्पर्धा

विदेशी प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहन

विदेशी प्रतिस्पर्धा को सीमित करना

6. उपभोक्ता

कम कीमत पर अधिक विकल्प

सीमित विकल्प एवं अपेक्षाकृत अधिक कीमत

7. घरेलू उद्योग

अधिक प्रतिस्पर्धा का सामना करते हैं

सरकारी संरक्षण प्राप्त करते हैं

8. सरकार की भूमिका

सीमित

सक्रिय एवं नियंत्रक

9. विदेशी निवेश

अधिक आकर्षित होता है

अपेक्षाकृत कम आकर्षित होता है

10. आर्थिक प्रभाव

- दक्षता एवं उत्पादन में वृद्धि
- घरेलू उद्योग एवं रोजगार में वृद्धि
- मुक्त व्यापार के लाभ
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विस्तार होता है।
- उपभोक्ताओं को कम कीमत पर बेहतर गुणवत्ता की वस्तुएँ मिलती हैं।
- प्रतिस्पर्धा के कारण उद्योग अधिक कुशल बनते हैं।
- तकनीकी विकास और नवाचार को बढ़ावा मिलता है।
- विदेशी निवेश में वृद्धि होती है।
- उत्पादन लागत कम होती है।
- आर्थिक विकास की गति तेज होती है।
- देशों के बीच मैत्रीपूर्ण आर्थिक संबंध विकसित होते हैं।
- मुक्त व्यापार की हानियाँ
- छोटे एवं नवोदित उद्योग प्रभावित हो सकते हैं।
- बेरोज़गारी की समस्या उत्पन्न हो सकती है।
- विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता बढ़ सकती है।
- व्यापार घाटा बढ़ने की संभावना रहती है।
- स्थानीय उद्योगों का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है।

संरक्षण नीति के लाभ

- नवोदित उद्योगों की रक्षा होती है।
- घरेलू उद्योगों का विकास होता है।
- रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।
- विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता कम होती है।
- राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े उद्योग सुरक्षित रहते हैं।
- भुगतान संतुलन में सुधार होता है।
- स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन मिलता है।
- आत्मनिर्भर भारत जैसी योजनाओं को बल मिलता है।
- संरक्षण नीति की हानियाँ
- प्रतिस्पर्धा कम होने से गुणवत्ता घट सकती है।
- वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं।
- उपभोक्ताओं को सीमित विकल्प मिलते हैं।
- उद्योगों में कार्यकुशलता कम हो सकती है।
- अन्य देशों के साथ व्यापारिक विवाद उत्पन्न हो सकते हैं।
- मुक्त व्यापार और संरक्षण नीति का महत्व
- विकासशील देशों के लिए दोनों नीतियाँ समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।
- जहाँ घरेलू उद्योग कमजोर हों, वहाँ संरक्षण नीति आवश्यक होती है।
- जहाँ उद्योग प्रतिस्पर्धी बन चुके हों, वहाँ मुक्त व्यापार अधिक लाभदायक होता है।
- आधुनिक समय में अधिकांश देश मिश्रित (Balanced) व्यापार नीति अपनाते हैं, जिसमें आवश्यक उद्योगों को संरक्षण दिया जाता है तथा अन्य क्षेत्रों में मुक्त व्यापार को प्रोत्साहित किया जाता है।

निष्कर्ष

मुक्त व्यापार और संरक्षण नीति अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की दो महत्वपूर्ण नीतियाँ हैं। मुक्त व्यापार वैश्विक प्रतिस्पर्धा, दक्षता, तकनीकी प्रगति और आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है, जबकि संरक्षण नीति घरेलू उद्योगों, किसानों, श्रमिकों तथा राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है। आज के वैश्वीकरण के युग में कोई भी देश पूर्णतः मुक्त व्यापार या पूर्णतः संरक्षण नीति नहीं अपनाता, बल्कि दोनों का संतुलित समन्वय करता है। यही संतुलित व्यापार नीति दीर्घकालीन आर्थिक विकास, आत्मनिर्भरता, रोजगार सृजन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सफलता का आधार मानी जाती